



मई : 2021

वर्ष : 4 अंक : 8

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार, मई 2021 आपके समक्ष प्रस्तुत है। न्युजलेटर के इस अंक में संस्थान की मार्च के अंतिम सप्ताह एवं अप्रैल 2021 महीने की अनुसंधान एवं अन्य कार्यकलापों का समावेश किया गया है। इस माह में हिमाचल प्रदेश के पोंग जलाशय में मछली संयोजन विश्लेषण के साथ कर्नाटक राज्य के नौ छोटे और मध्यम जलाशयों का सर्वेक्षण किया गया। अरुणाचल प्रदेश के बोर बील में पेन में मत्स्य बीज संचयन के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम, विश्व जल दिवस का आयोजन, रैंचिंग कार्यक्रमों द्वारा गंगा नदी में एक लाख से अधिक मत्स्य बीजों का प्रवाह, बिहार के पूर्वी चंपारण के मछुआरों के लिए आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास पर कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम बैंगलोर अनुसंधान केंद्र को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का उत्कृष्ट कार्य के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करना आदि प्रमुख कर्णलाप रहे। संस्थान में अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक(वर्ष 2020-2022) ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों मोड में आयोजित की गई। कोरोना महामारी के इस विकट समय में मैं आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

धन्यवाद,

बिजे.एस

(बसन्त कुमार दास)

संस्थान, की अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की बैठक



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की बैठक 01-02 अप्रैल, 2021 के दौरान ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों मोड में आयोजित की गई। आरएसी के माननीय अध्यक्ष प्रो (डॉ.) बस्करन मणिमारन ने शारीरिक रूप से बैठक में भाग लिया, जबकि अन्य आरएसी सदस्य डॉ. के.जी. पद्मकुमार, डॉ. शरद कुमार जैन और डॉ. एस. सी. पाठक ने ऑनलाइन के माध्यम से बैठक में भाग लिया। आरएसी के सदस्य सचिव डॉ. ए के दास ने आरएसी के अध्यक्ष और सदस्यों के औपचारिक स्वागत के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। प्रारंभिक टिप्पणियों के बाद संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. दास ने संस्थान की विभिन्न अनुसंधान और विकासात्मक गतिविधियों के बारे में नई शोध पहल, मछुआरों के लिए कोविड दिशानिर्देशों / पीएफसीएस, महामारी के दौरान उच्च प्रभाव वाले प्रकाशनों और बुनियादी ढाँचे के विकास के बारे में अवगत कराया। उन्होंने संस्थान में दो नए अनुसंधान प्रभागों जलीय पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी और नैनो प्रौद्योगिकी (AEBN), और मत्स्य संवर्धन प्रबंधन (FEM) के गठन का भी उल्लेख किया है। अध्यक्ष, प्रो मणिमारन ने अपने उद्घाटन भाषण में संस्थान की उपलब्धियों की सराहना की और आरएसी के अध्यक्ष के रूप में इस प्रमुख अनुसंधान संस्थान के साथ जुड़े रहने के लिए सम्मानित मसूस किया। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों से महत्वाकांक्षी PMMSY के संदर्भ में तकनीकी मार्गदर्शन और प्रबंधन योजना प्रदान करने में एक प्रमुख भूमिका निभाने का आग्रह किया और ESG पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि यह प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में एक सर्वोच्च संस्थान है। डॉ. पद्मकुमार ने संस्थान





के साथ अपने जुड़ाव को याद किया और समिति के समक्ष प्रस्तुत संस्थान की उपलब्धियों पर भी संतोष व्यक्त किया। उन्होंने देश में अंतर्स्थलीय मछली उत्पादन में वृद्धि को बढ़ावा देने में संस्थान द्वारा दिए गए समर्थन पर जोर दिया। डॉ. जैन ने इस संस्थान के साथ अपना जुड़ाव व्यक्त किया और उच्च प्रभावी प्रकाशनों सहित उपलब्धियों की सराहना की। डॉ. पाठक ने संस्थान के साथ अपने लंबे जुड़ाव को याद किया और कहा कि संस्थान ने अपने अनुसंधान कार्यक्रमों का काफी विस्तार किया है। उन्होंने प्रभाव बनाने वाली तकनीकों को प्राथमिकता देने पर अधिक ध्यान देने का सुझाव दिया है। आरएसी के अध्यक्ष और सदस्यों द्वारा प्रारंभिक टिप्पणी सदस्य सचिव, आरएसी द्वारा एक्शन टेकन रिपोर्ट की प्रस्तुति के बाद की गई थी। समिति ने कहा कि एटीआर बहुत शीघ्र तैयार गया इसमें हर बिंदुजोर दिया जाना जरूरी है। प्रभागों के प्रमुखों, क्षेत्रीय केंद्रों और स्टेशनों के प्रमुखों / प्रभारियों ने अपने संबंधित प्रभागों / इकाइयों / केंद्रों में विभिन्न संस्थान परियोजनाओं और अन्य गतिविधियों के तहत उपलब्ध उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। संबंधित प्रधान अन्वेषक द्वारा दो आईसीएआर नेटवर्क परियोजना के उपलब्धियां भी प्रस्तुत की। अध्यक्ष प्रो. मणिमारन और अन्य सदस्यों ने समग्र प्रगति में अपनी संतुष्टि व्यक्त की और संस्थान द्वारा की गई विभिन्न पहलों की भी सराहना की। उन्होंने 75 वें स्थापना दिवस के उत्सव पर संस्थान के निदेशक और कर्मचारियों को बधाई दी। अंत में, अध्यक्ष और सदस्यों



ने अनुसंधान गतिविधियों की दिशा में महत्वपूर्ण समीक्षा और सुझावों के साथ अपनी समापन टिप्पणी की और आरएसी की सिफारिशें कीं। निदेशक डॉ. दास ने अपने मूल्यवान सुझावों और टिप्पणियों के लिए अध्यक्ष और सभी आरएसी सदस्यों को धन्यवाद दिया, जो संस्थान को अपने अनुसंधान कार्यक्रमों को आकार देने और अधिक ऊंचाई के लिए प्रयास करने के लिए अनुसंधान फोकस को प्राथमिकता देने में मदद करेंगे। बैठक आरएसी सदस्य सचिव, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर द्वारा धन्यवाद के औपचारिक वोट के साथ समाप्त हुई।

अरुणाचल प्रदेश के बोर बील में पेन में मत्स्य बीज संचयन के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, गुवाहाटी ने दिनांक 24 मार्च 2021 को अरुणाचल प्रदेश के जोना III गाँव में बोर बील तट पर सहायक निदेशक (मत्स्य), नामसाई जिला के सहयोग से “आजीविका



उन्नयन हेतु पेन में मछली पालन तकनीक” पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर इस बील में स्थापित पेन के मत्स्य बीजों का संचयन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य नेशनल मिशन ऑन हिमालयन स्टडिज़ द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत आजीविका सुधार के लिए राज्यों में पेन पालन तकनीक का मानकीकरण करना है। कार्यान्वयन अधिकरण के तौर पर संस्थान द्वारा सहायक निदेशक (मत्स्य), अरुणाचल प्रदेश के सहयोग से इस राज्य के आर्द्रक्षेत्र मछुआरों द्वारा बोरबिल में पेन पालन को बढ़ावा देने के लिए यह संयुक्त प्रयास किया जा रहा है। पर सर्वेक्षण में यह देखा गया है कि बोरबील में जलीय मैक्रोफाइट प्रचुर तौर पर पाये गए हैं। बील में लगभग 70 प्रतिशत मैक्रोफाइट के होने के कारण इसमें मत्स्य पालन करना संभव नहीं है। नेशनल मिशन ऑन हिमालयन स्टडिज़ (NMHS) परियोजना के तहत, अधिक मैक्रोफाइट ग्रसित क्षेत्रों को साफ किया गया जिससे पेन पालन किया जा सके। स्थानीय मछुआरा समुदायों की सक्रिय भागीदारी के साथ बील के 0.1 हेक्टेयर क्षेत्र में पांच

पेन स्थापित किए गए। इन पेन क्षेत्रों में *लेबियो रोहिता*, *सिरिनहिनस मृगला*, *एल. बाटा*, *हाइपोथालमिक्थिस मोलिट्रिक्स* और *साइप्रिनस कार्पिओ* सहित कुल 25,000 मछलियों की अंगुलिकाओं को पेन क्षेत्रों में संचयित किया गया। संस्थान ने पालित मछलियों को खिलाने के लिए 3.5 टन सिफरी केजग्रो फ्लोटिंग फीड भी प्रदान किया। इस जागरूकता कार्यक्रम में श्री पी. सी. भट्टाचार्य, सहायक निदेशक (मत्स्य), नामसाई अरुणाचल प्रदेश; श्री आर. कुलश्रेष्ठ, जिला मत्स्य अधिकारी; आइरोम मोहिन्द्रो सिंह,





मत्स्य अधिकारी; बिमान पनग्योक, मत्स्य प्रदर्शन अधिकारी, स्थानीय प्रतिभागी और संस्थान दल के सदस्य उपस्थित हुये। इसमें गाँव की कुल 51 मछुआरे (जिनमें 17 महिलाएँ भी शामिल हैं) ने कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. एस.सी.एस. दास, वैज्ञानिक ने अधिकारियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और यह बताया कि मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए पेन पालन तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। उन्होंने मछुआरों से संस्थान से तकनीकी सहायता के साथ पेन पालन तकनीक को लागू करने के लिए प्रयास करने का आग्रह किया। नेशनल मिशन ऑन हिमालयन स्टडिज़ के प्रतिनिधि, श्री पी. सी. भट्टाचार्य से संस्थान के प्राप्त सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। श्री धन्याबाद गोगोई, गबूरा गाँव और मछुआरों के प्रतिनिधियों ने संस्थान द्वारा दिए गए सहयोग के लिए धन्यवाद व्यक्त किया और अपने साथी मछुआरों से पेन पालन तकनीकों को अपनाने का आग्रह किया। डॉ. सोना येंगकोपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने फीडिंग गतिविधियों, जल की गुणवत्ता और मत्स्य स्वास्थ्य निगरानी सहित संचयन पश्चात प्रबंधन अभ्यास के बारे में मछुआरों को समझाया। उन्होंने परियोजना को लागू करने के लिए NMHS, अल्मोड़ा द्वारा दिए गए वित्तीय अनुदान को स्वीकार किया। परियोजना के सुगम और सफल कार्यान्वयन के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने परियोजना गतिविधियों और मछुआरों को उनकी सक्रिय भागीदारी और सहयोग के लिए मात्स्यिकी विभाग, नामसाई के अधिकारियों को भी धन्यवाद दिया। पेन पालन में उपयोग के लिए मछुआरों को सिफरी के जगो फीड वितरित किए गए। संस्थान के इस पहल से यह आशा की जा रही है कि इस जागरूकता कार्यक्रम और प्रदर्शन के माध्यम से, बोर बील में पेन पालन को अपनाया जाएगा जिससे मछुआरों की आय और आजीविका में आशातीत वृद्धि होगी।



संस्थान में “अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में भू-स्थानिक अनुप्रयोग” पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के साथ मिलकर दिनांक 26 मार्च, 2021 को “अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में भू-स्थानिक अनुप्रयोग” पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान के निदेशक, डॉ.



बि. के. दास के नेतृत्व में आयोजन किया। इस प्रशिक्षण में विभिन्न प्रभाग के प्रमुख डॉ. एस. सामंता, प्रभागाध्यक्ष, नदीय एवं परितंत्र मात्स्यिकी प्रभाग (REF); डॉ. यू.के. सरकार, प्रभागाध्यक्ष, जलाशय और आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग (REF); डॉ. बी के बेहरा, प्रभागाध्यक्ष, जलीय पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी और नैनो प्रौद्योगिकी (AEBN) प्रभाग; डॉ. एस के नाग, प्रभागाध्यक्ष, मत्स्य संसाधन मूल्यांकन और सूचना विज्ञान (FRAI) प्रभाग तथा श्री एस.के. साहू, प्रभारी, एकेएमयू, और प्रशिक्षण और विस्तार इकाई से डॉ. ए के दास और श्री गणेश चंद्र उपस्थित थे। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में कई सम्मानित प्रतिभागी, डॉ. मीरा डी अंसल, डीन, मात्स्यिकी महाविद्यालय, गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा एवं प्राणी विज्ञान विश्व विद्यालय (GADVASU), संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, बैंगलोर से श्री एम. कार्तिकेयन, डीन, मात्स्यिकी महाविद्यालय, ओडिशा के छात्र; रू अंगद देव पशु चिकित्सा एवं प्राणी विज्ञान विश्व विद्यालय (GADVASU), लुधियाना और कामधेनु विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ के छात्र उपस्थित थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान सहित अन्य विश्वविद्यालयों के कुल 70 सक्रिय कर्मियों (50 ऑनलाइन और 20 ऑफलाइन) ने ऑनलाइन मोड में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने किया और अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में भू-स्थानिक तकनीकों के अनुप्रयोग में संस्थान की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। उन्होंने संस्थान द्वारा क्रियान्वित सूदूर संवेदी (रिमोट सेंसिंग) और जीआईएस (GIS) तकनीक तथा उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने अंतर्स्थलीय जलीय जीवों के प्रबंधन में क्रियान्वित भू-स्थानिक तकनीकों की दिशा में संस्थान द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों की एक रूपरेखा दी। डॉ. पी. के. परिदा ने मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं के लिए जीआईएस अनुप्रयोग का एक परिदृश्य प्रस्तुत किया कि कैसे विभिन्न स्थानिक और लौकिक आंकड़ों को जीआईएस प्लेटफॉर्म में प्रस्तुत किया जा सकता है और उन्होंने जीआईएस एप्लिकेशन के लाभ पर भी प्रकाश डाला। श्री एस. के. साहू ने ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर और खरीदे गए जीआईएस सॉफ्टवेयर पर एक तुलनात्मक प्रस्तुति दी और दोनों सॉफ्टवेयर के अतिरिक्त बिंदुओं पर प्रकाश डाला। सुश्री मनीषा ने जीआईएस का एक परिचय दिया। सुश्री तनिया ने जीआईएस पर डेटा प्रस्तुति के बारे में बताया। सभी प्रतिभागियों के प्रश्नों को विचार मंथन सत्र के दौरान स्पष्ट किया गया। समग्र कार्यक्रम को श्री एस. के. साहू वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. पी.के. परीदा, वैज्ञानिक द्वारा डॉ. ए के दास, ई एंड टी सेल द्वारा अच्छी तरह से समन्वित किया गया। कार्यक्रम में मो. नईम तकनीकी सहायक और श्री अविषेक साहा, तकनीकी सहायक, द्वारा सहायता प्रदान की गई।

संस्थान में 22 मार्च, 2021 को विश्व जल दिवस का आयोजन



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतरस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने विश्व जल दिवस के अवसर पर दिनांक 22 मार्च, 2021 को वर्तमान थीम आधारित “दीर्घकालिक मछली पालन हेतु जल का महत्व” विषय पर एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री यू.पी. सिंह, आईएएस, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग में पूर्व सचिव, जल शक्ति मंत्रालय और वर्तमान में कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव थे। प्रो. गोविंद चक्रपाणि, कुलपति, बरहमपुर विश्वविद्यालय, ओडिशा अतिथि थे। कार्यक्रम का आरंभ डॉ. बि.के. दास, निदेशक के स्वागत भाषण से की गई। श्री सिंह ने अपने संबोधन में जल प्रबंधन के विभिन्न मुद्दों और जल संरक्षण के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से जल प्रबंधन के लिए पाँच सूत्री रणनीति - जल के उपयोग को घटाना, पुनःउपयोग, पुनर्चक्रण, पुनर्भरण और सम्मान करना- का उल्लेख किया। सम्मानित अतिथि, प्रो.चक्रपाणी ने जीवन संरक्षण, मत्स्य पालन और जैव विविधता को बनाए रखने के लिए जल प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. बि. के. दास ने दीर्घकालिक आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के लिए जल के मूल्य निर्धारण पर एक प्रस्तुति दी जिसमें

उन्होंने विभिन्न जलीय प्रजातियों के उत्पादन और संरक्षण वृद्धि में आर्द्रभूमि के महत्व को बताया। प्रो. कनीज़ फ़ातेमा, अध्यक्ष, मत्स्य संसाधन प्रबंधन, बांग्लादेश कृषि विश्वविद्यालय ने बांग्लादेश के दृष्टिकोण से स्थायी मत्स्य पालन के लिए जल प्रबंधन पर बात की। उन्होंने बांग्लादेश में अंतरस्थलीय मत्स्य पालन के लिए विभिन्न जल संसाधनों, जल प्रबंधन मुद्दों और जल के स्थायी उपयोग के लिए अपनाई गई प्रणालियों का उल्लेख किया। उन्होंने हितधारकों के बीच बेहतर समन्वय हेतु





सुझाव भी दिया। प्रो. तुहीन घोष, निदेशक, समुद्रीविज्ञान अध्ययन, जादवपुर विश्वविद्यालय ने एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन (ICZM) और तटीय मत्स्य पालन के लिए जल के मूल्यांकन पर प्रकाश डाला। प्रो. शरद जैन, विजिटिंग प्रोफेसर, बी.वी. हरीतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की ने संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. ए.के. साहू के साथ सतत मत्स्य पालन के लिए नदी बेसिन प्रबंधन पर एक प्रस्तुति दी जिसका शीर्षक था – दीर्घकालिक मत्स्य पालन के लिए नदीय बेसिन प्रबंधन : खुला जल संसाधनों के लिए महत्वपूर्ण। इस प्रस्तुति में विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया जैसे 'जल अवरोध, पृथक्करण, प्रदूषण, प्रवाह, जल प्रवाह वेग आदि। प्रो. जयगोपाल जेना, अध्यक्ष, सिविल इंजीनियरिंग, गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजिकल एडवांसमेंट, बीजू पटनायक प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने “जल विद्युत निर्माण के दौरान जलीय जीवन को बनाए रखने के लिए

जल विज्ञान और पारिस्थितिकी के मध्य संतुलन” पर चर्चा की। उन्होंने जल विद्युत उत्पादन स्थलों में स्थायी मत्स्य पालन के लिए पारिस्थितिकी और जल विज्ञान दोनों के महत्व पर बल दिया। इस ऑनलाइन संगोष्ठी में संस्थान के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारियों, छात्रों, अनुसंधान विद्वानों और किसानों ने भाग लिया। डॉ. एस. के. नाग, प्रभागाध्यक्ष, मत्स्य संसाधन मूल्यांकन और सूचना विज्ञान विभाग और कार्यक्रम समन्वयक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।



रैचिंग कार्यक्रमों द्वारा गंगा नदी में एक लाख से अधिक मत्स्य बीजों को गंगा नदी में प्रवाहित किया गया



नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत गंगा नदी में इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों की मछलियों को बचाने और संरक्षित करने के लिए इन प्रजातियों के एक लाख से अधिक अंगुलिकाओं को प्रयागराज में रैचिंग-सह-जन जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से प्रवाहित किया गया। इस श्रृंखला में कानपुर और वाराणसी के बीच गंगा नदी के विभिन्न स्थानों पर कुल छह कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें मछुआरों और भागीदारों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य गंगा नदी के किनारे पर रहने वाले लोगों को जागरूक करना था कि गंगा को कैसे और क्यों स्वच्छ रखना है। संस्थान क क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक, डॉ. डी. एन झा ने नमामि गंगे (नेशनल मिशन ऑफ क्लीन गंगा) कार्यक्रम के तहत संस्थान द्वारा गंगा नदी में मछली पालन और मात्स्यिकी संरक्षण कि दिशा में किए गए प्रयासों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने मछुआरा समुदाय को प्रजनन अवधि के दौरान इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों के पोना मछलियों को नहीं पकड़ने और मत्स्यायन के लिए मछरदानी का उपयोग नहीं करने कि सलाह दी। कार्यक्रम में इस केंद्र के विभिन्न वैज्ञानिक, डॉ. अबसार आलम, डॉ. वेंकटेश आर ठाकुर, डॉ. मोनिका गुप्ता ने गंगा नदी की मछली जैव विविधता के संरक्षण में महत्व पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में गंगा विचार मंच, गंगा प्रहरी, गंगा सेवा समिति, गंगा टास्क फोर्स , डब्ल्यूआईआई, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधि तथा आसपास के गांवों के मछुआरें, मछली व्यापारी, स्थानीय लोग और प्रयागराज केंद्र के अन्य कर्मी उपस्थित थे।



“बिहार के पूर्वी चंपारण के मछुआरों के लिए आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास” पर कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 22-23 मार्च 2021 को कृषि विज्ञान केंद्र, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पिपराकोठी, पूर्वी चंपारण में " बिहार के पूर्वी चंपारण के मछुआरों के लिए आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास पर एक कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम" का आयोजन किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि, श्री प्रमोद कुमार, माननीय मंत्री, गन्ना उद्योग और कानून विभाग, बिहार सरकार थे। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के स्वागत भाषण के साथ हुआ जो ऑनलाइन मोड में किया गया। उन्होंने सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रशिक्षुओं का कार्यक्रम में स्वागत किया। उन्होंने कहा कि किसानों की आय को दोगुना करने के लिए संस्थान बिहार के 5 आर्द्रभूमि में पिछले चार वर्षों से प्रतिबद्ध रूप से काम कर रहा है जिसमें लाइन विभागों का सहयोग अन्यतम है। डॉ. एम. ए. हसन, प्रभागाध्यक्ष, मात्स्यिकी संवर्धन प्रबंधन प्रभाग ने पालन आधारित मात्स्यिकी विकास के लिए घेरे में पालन प्रणाली जैसे पिंजरे और पेन में मछली पालन, इन-सीटू नर्सरी पालन आदि प्रौद्योगिकियों के महत्व पर जोर दिया जिससे आर्द्रभूमि में मात्स्यिकी विकास किया जा सकता है। उन्होंने बाढ़ के दौरान मैक्रोफाइट प्रबंधन और लिंक चैनल के माध्यम से मछलियों के पलायन को रोकने जैसी प्रबंधन रणनीतियों की चर्चा की। श्री प्रमोद कुमार, माननीय मंत्री, गन्ना उद्योग और कानून विभाग, बिहार सरकार ने अपने संबोधन में निदेशक और संस्थान के टीम को आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास में संस्थान के अथक प्रयासों के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि वे डॉ. राधा मोहन सिंह जी, पूर्व केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने आर्द्रभूमि के मछुआरों के लिए महत्वाकांक्षी तथा विकासात्मक कार्यक्रम लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन मछुआरों का आर्द्रभूमि में मछली उत्पादन और उत्पादकता वृद्धि में बहुत बड़ा योगदान है और इससे उनकी आय भी बढ़ी है। उन्होंने संस्थान की गतिविधियों की सराहना की और अन्य अविकसित गोखुर (ऑक्सबो) झीलों में पंचवर्षीय कार्यक्रम के विस्तार के लिए अनुरोध किया। भारत के माननीय प्रधान मंत्री के आत्मनिर्भर बनने के आह्वान हेतु उन्होंने मछुआरों को सामाजिक विकास में सहयोग करने और कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने संस्थान द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त मछुआरों से भी अनुरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि पूर्वी चंपारण में मछली उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप अन्य राज्यों से मछली की आपूर्ति पर क्षेत्र की निर्भरता कम हो गई है। श्री प्रकाश अस्थाना, सदस्य, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने बिहार दिवस के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं दीं और इस क्षेत्र में विकास और मत्स्य पालन की दिशा में संस्थान के प्रयास की सराहना की। उन्होंने इस क्षेत्र के अन्य आर्द्रक्षेत्रों में भी मात्स्यिकी विस्तार कार्यक्रम के लिए आग्रह किया। श्री रवींद्र साहनी, मुखिया, पिपराकोठी और अध्यक्ष, पिपराकोठी मछुआरा सहकारी समिति ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड के माध्यम से परियोजनाओं के अनुमोदन के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने ना केवल मछली उत्पादन को दोगुना करने में बल्कि मछुआरों की क्षमता निर्माण और उन्हे



आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि पांच आर्द्रभूमि में परियोजनाओं की अपार सफलता ने मत्स्य पालकों को मत्स्य उत्पादन बढ़ाने और तकनीको के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया है तथा उनमें आत्मविश्वास की भावना जगाई है। उन्होंने संस्थान द्वारा प्रदत्त बुनियादी सुविधाओं लिए आभार व्यक्त किया जो सहकारी समिति के लिए एक परिसंपत्ति होगी। श्री सनत कुमार सिंह, उप मात्स्यिकी अधिकारी, पूर्वी चंपारण ने संस्थान की वैज्ञानिक टीम द्वारा मछुआरों को जागरूकता पैदा करने और उनकी आजीविका बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण देने और बीज उत्पादन की लागत को कम करने के लिए पेन, पिंजरे और नर्सरी तालाबों आदि जैसे बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने तथा उपयुक्त आकार के बीज की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए संस्थान दल की सराहना की। कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी के प्रमुख श्री अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि विकास परियोजनाओं का कार्यान्वयन और उपलब्धियां उनके लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र इस क्षेत्र के विकास की दिशा में अनुसंधान और विकास गतिविधियों के लिए यथासंभव समर्थन देने के लिए तैयार है। कार्यक्रम का समापन संस्थान के वैज्ञानिक श्री गणेश चंद्रा के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया, जिसके बाद राष्ट्रीय गान हुआ। कार्यक्रम का समन्वय और संचालन श्री गणेश चंद्र, डॉ. सुमन कुमारी, डॉ. राजू बैठा, डॉ. मिशाल पी, श्रीमति गुंजन कर्नाटक, श्री मानबेन्द्र रॉय, श्री बबलू नस्कर और परियोजना के फील्ड कर्मचारियों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्वी चंपारण के कुल 500 आर्द्रभूमि मछुआरों ने इस कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया तथा माननीय मंत्री ने "बिहार में आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास" पर एक पुस्तिका का लोकार्पण किया।



निदेशक भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का वडोदरा केंद्र का दौरा



भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास ने 11.03.2021 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान वडोदरा के नए भवन का दौरा किया और रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन किया।



सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), द्वारा बैंगलोर अनुसंधान केंद्र का दौरा

डॉ. प्रवीण पुथरा, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने दिनांक 20 फरवरी, 2021 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के बैंगलोर अनुसंधान केंद्र का दौरा किया। उन्होंने संस्थान और भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, बैंगलोर के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। उन्हें अनुसंधान कार्यक्रम आरंभ करने के लिए प्रोत्साहित किया जो राष्ट्रीय हित को पूरा करने के साथ प्रायद्वीपीय क्षेत्र की आवश्यकता को भी पूरा कर सके।



संस्थान के बैंगलोर अनुसंधान केंद्र को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कार



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के बैंगलोर अनुसंधान केंद्र को वर्ष 2019-20 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (TOLIC), बैंगलोर द्वारा आधिकारिक भाषा के कार्यान्वयन पर उत्कृष्ट कार्य के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 17.3.2021 को आयोजित एक समारोह में श्रीमति शारदा संपत, प्रधान पोस्ट मास्टर जनरल, कर्नाटक अंचल के कर कमलों द्वारा प्रशस्ति प्रमाण पत्र और शील्ड डॉ. प्रीथा पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक और केंद्र प्रमुख तथा श्री एम. फिरोज खान, वैज्ञानिक और हिंदी कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष ने प्राप्त किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- पोंग जलाशय, हिमाचल प्रदेश के मछली संयोजन विश्लेषण ने प्रजातियों की विविधता में कमी और स्पेराटस सिंघाला (65 प्रतिशत), लेबियो रोहिता (10 प्रतिशत), महासीर (9 प्रतिशत) और कॉमन कार्प (5 प्रतिशत) की बहुलता का संकेत देते हैं। कैनोनिकल कॉर्रिस्पोंडेंस एनालिसिस के अनुसार तापमान, पीएच और पानी की गहराई महत्वपूर्ण जल प्राचल हैं जो जलाशय में एस सिंघाला की प्रचुरता को प्रभावित करते हैं।
- रशिकुल्या मुहाना की ऊपरी क्षेत्र में लगभग 68.48 प्रतिशत गिल नेट कैच में दलदली केकड़ों (स्काइला एसपीपी) दर्ज किये गये। इसके बाद स्टोलफोरस इन्डकस (10.96 प्रतिशत) और थ्रिसमाला बेरिका (6.85 प्रतिशत) जैसी मछली प्रजातियां देखी गईं।
- हुगली मुहाना से सर्दियों के दौरान के नमूने दर्ज किए गए जिसमें 41 फैमिली और 14 आर्डर की 94 मछली प्रजातियों में पर्सिफॉर्मिस की प्रचुरता (37.23 प्रतिशत) थी। इसके बाद साइप्रिनफॉर्मिस (17.02 प्रतिशत) और क्लूपीफॉर्मिस (15.96 प्रतिशत) दर्ज किये गये।
- कर्नाटक राज्य के नौ छोटे (कनवा, वोटहोल, अंजनपुरा और गायत्री) और मध्यम (जंबदहल्ला, तुंगा, वरही, शांतिसागर और बोरानाकनिव) जलाशयों की जलीय-जैविक स्थिति का आंकलन किया

गया। जल गुणवत्ता सूचकांक यह इंगित करता है, तुंगा जलाशय को छोड़कर बाकी सभी जलाशयों की जल गुणवत्ता 'खराब' से 'अनुपयुक्त' श्रेणी के अंतर्गत रखी गई हैं। अतः जल गुणवत्ता की जांच के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 24 मार्च, 2021 को मत्स्य, मत्स्य पालन और जलीय कृषि अनुभागीय समिति, एफएडी 12 (भारतीय मानक ब्यूरो) की 14वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 25 मार्च, 2021 को गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना बेसिन में गंगा नदी डॉल्फिन के संरक्षण पर हितधारकों की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 25 मार्च, 2021 को नाबार्ड चेयर यूनिट, आईसीएआर-सीएमएफआरआई, मुंबई क्षेत्रीय स्टेशन, मुंबई द्वारा प्रतिष्ठित व्याख्यान समारोह में भारतीय नदी बेसिन में प्रतिमान बदलाव और उसके जलीय जीवन आजीविका का एक स्रोत पर व्याख्यान दिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 25 मार्च, 2021 को श्रीमती देवजानी पात्रा, सदस्य (पर्यावरण और पुनर्वास), नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, इंदौर के साथ बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 26 मार्च, 2021 को वी2वी विषयगत वेबिनार में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 8-9 अप्रैल 2021 को डॉ. संजीव कुमार बाल्यान राज्य मंत्री, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मुख्यालय, बैरकपुर में आयोजित बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 8 अप्रैल, 2021 को मनोज मिश्रा बनाम यूओआई और अन्य के मामले में ओए नंबर 06/2012 में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से संयुक्त समिति की छठी बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 9 अप्रैल, 2021 को गंगा-पद्मा बैराज परियोजना (जीबीपी) पर भारत-बांग्लादेश संयुक्त तकनीकी समिति (जेटीसी) की पहली बैठक में भारत के प्रतिनिधि के तौर पर भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति-II की दिनांक 12 अप्रैल, 2021 की छमाही समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 अप्रैल 2021 को भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति- VIII की मध्यावधि समीक्षा बैठक के वीडियो सम्मेलन में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 12 अप्रैल, 2021 को मत्स्य पालन क्षेत्र की 75 स्वतंत्र उत्सव 'आजादी का अमृत महोत्सव' (एकेएएम) के लिए भारत के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) के तहत की जाने वाली विभिन्न प्रयासों पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 15 अप्रैल, 2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 'नदी घाटी परियोजनाओं विशेषज्ञ मूल्यांकन' समिति की 10वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने वी2वी द्वारा आयोजित दिनांक 15 अप्रैल, 2021 को वेबिनार में स्थिति विश्लेषण जांच में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने भारत का अमृत महोत्सव, भाकृअनुप व्याख्यान श्रृंखला-5 के तहत दिनांक 16 अप्रैल, 2021 को उपमहानिदेशक (मत्स्य पालन) द्वारा दिए गए 'खाद्य सुरक्षा हेतु जलीय पालन, आय वृद्धि, सामाजिक उत्थान और स्वास्थ्य रक्षा' पर आभासी व्याख्यान में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 21 अप्रैल, 2021 को दक्षिण एशिया की ट्रांसबाउंड्री नदीय परियोजना के तहत ऑक्सफैम एफिलिएट, ऑक्सफैम नोबिब, कंबोडिया कार्यालय अर्थात ट्रोसा द्वारा आयोजित ट्रोसा एनुअल लर्निंग एंड रिफ्लेक्शन फोरम (एएलएफ) 2021 में जलीय पालन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सरकारी क्षेत्र की भूमिका पर एक व्याख्यान दिया।

अन्य

- एनएसएफ परियोजना की सलाहकार समिति की बैठक 'हिल्सा, टेनुआलोसा इलिशा का घेरे में प्रजनन चरण-1। का आयोजन संस्थान मुख्यालय बैरकपुर में दिनांक 19 से 20 अप्रैल, 2021 तक किया गया।
- मुख्यालय बैरकपुर और इलाहाबाद केंद्र द्वारा दिनांक 16 से 30 मार्च, 2021 के दौरान इंडियन मेजर कार्प और हिल्सा मछली पालन पर, पोस्टर, लीफलेट आदि के माध्यम से जागरूकता, नदी घाटों की सफाई और स्वच्छता के माध्यम से 'गंगा स्वच्छता पखवाड़ा' मनाया गया। पश्चिम बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश के नदी के विभिन्न घाटों पर विशेष रूप से हिल्सा मछली से संबंधित विनाशकारी मछली पकड़ने के तरीकों के बारे में बताया गया।
- दिनांक 18 अप्रैल 2021 को कोथेश्वर हैचरी, टिहरी उत्तराखंड द्वारा 'महासीर और ट्राउट का संरक्षण' विषय पर जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था।
- मात्स्यिकी, विभाग उत्तराखंड सरकार के सहयोग से उत्तराखंड के कोटेश्वर बांध, टिहरी में महासीर के 1000 अंगुलिकाओं को प्रवर्धित किया गया।

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों के सामने चतुर्थ वर्ष का आठवां अंक मई, 2021) प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए हार्दिक धन्यवाद। आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। सम्पादक मण्डल की तरफ से सभी पाठकगण से विनती है कि आप सभी समाजिक दूरी बना कर रखें, मास्क का प्रयोग करें। समयानुसार कोरोना की वैक्सीन लगवाएं। स्वस्थ रहें।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव ताल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम **फोटोग्राफी:** सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in